**ओ३म्**

**श्रद्धांजलि**

**‘महत्वपूर्ण आर्य साहित्य का प्रकाशन और प्रचार**

**प्रसार आचार्य सत्यानन्द नैष्ठिक का जुनून था’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

आर्यसमाज को जिन विद्वानों ने अपने खून व पसीने अर्थात् समय, साधनों व पुरुषार्थ को पूर्णतया समर्पित करके सींचा है, उनमें एक प्रमुख नाम आचार्य सत्यानन्द नैष्ठिक जी का है जिनका 2 अप्रैल, 2017 को देहरादून के हिमालयन हास्पीटल में सायं 7 बजे दुःखद वियोग वा देहावसान हुआ है। आचार्य जी से हमारा पहला परिचय सन् 1997 में हिण्डोन सिटी, राजस्थान में हुआ था जब हम वहां आयोजित पं. लेखराम बलिदान शताब्दी समारोह में भाग लेने गये थे। वहां अनेक प्रकाशक अपने प्रकाशन प्रदर्शित कर उनका विक्रय कर रहे थे। तब हमने आपके प्रकाशनों को पहली बार सामूहिक रूप से देखा था व आपसे वार्ता कर कुछ कुछ परिचय प्राप्त किया था। याद आता है कि हमने आपसे अपनी पसन्द की अनेक पुस्तकें भी ली थीं। इस कार्यक्रम में भाग लेने हम देहरादून से कुछ मित्रों श्री दौलत सिंह राणा, श्री राजेन्द्र कुमार, एडवोकेट एवं स्व. श्री रामप्रसाद आर्य जी के साथ गये थे। इसकी प्रेरणा हमें वयोवृद्ध आर्य विद्वान प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने की थी। इसी अवसर पर प्रथमवार हमारा श्री प्रभाकरदेव जी से सम्पर्क व सम्बन्ध बना था। इय अवसर पर हमने आचार्य सत्यानन्द जी के पुस्तक स्टाल के कुछ चित्र भी लिये थे जो हमारे किसी एलबम में होंगे जिन्हें समयाभाव के कारण इस समय प्रस्तुत करना कठिन लग रहा है। यह भी बता दें कि इस आयोजन में श्री कैप्टेन देवरत्न आर्य मुम्बई/अजमेर, श्री अरुण अब्रोल जी मुम्बई, स्वामी सुमेधानन्द जी सीकर, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी करनाल, श्री नरेशदत्त आर्य तथा श्री सत्यपाल सरल जी आदि विद्वान व संन्यासी पधारे हुए थे।

आचार्य सत्यानन्द जी से एक भेंट हरिद्वार के योगधाम के वार्षिकोत्सव के आयोजन में भी हुई थी जब वह वहां अपने साहित्य सहित पहुंचे हुए थे। उस अवसर पर हमने आचार्य जी से सोमसरोवर सहित कुछ पुस्तकें ली थीं। विगत वर्ष परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा 4-6 नवम्बर, 2016 को अजमेर में आयोजित ऋषि मेले में हमारा जाना हुआ। हमें पुस्तकों का शौक है। श्री अजय आर्य, मैसर्स विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली ने भी वहां अपना स्टाल लगाया हुआ था। अन्य अनेक प्रकाशकों व पुस्तक विक्रेताओं के वहां स्टाल थे। हमारे लिये यह पुस्तक स्टाल ही ऐसे अवसरों पर सबसे अधिक आकर्षण का केन्द्र होते हैं। ऋषि मेले में पुस्तकों के स्टालों पर प्रवेश करते हुए पहला स्टाल परोपकारिणी सथा के वैदिक पुस्तकालय का था जिसकी बगल में दूसरा स्टाल आचार्य सत्यानन्द जी का था। हमने वहां खड़े होकर सभी पुस्तकों को देखा था। आचार्य सत्यानन्द जी का स्वास्थ्य ठीक नहीं था। वह बहुत कम बोल रहे थे। आचार्य जी वहीं एक चारपाई पर लेटे रहते थे। जब कोई ग्राहक पुस्तक विक्रेता वा सहयोगी ब्रह्मचारी से पुस्तक के विषय में कुछ पूछता अथवा मूल्य का भावताव करता था तो आचार्य जी उठ बैठते थे और उसकी बातों का समाधान करते थे। हमने भी आचार्य जी से संक्षिप्त बातें की थी। एक दिन देखा कि वहां आर्यजगत के विख्यात तपोनिष्ठ विद्वान आचार्य सत्यजित् जी बैठे हैं। हमारे साथ देहरादून के प्रमुख आर्य विद्वान श्री कृष्णकान्त वैदिक जी थे। हम दोनों आचार्य जी का पास से दर्शन करने और उनका आशीर्वाद लेने पहुंच गये थे। आचार्य जी ने दिल खोलकर हमें आशीर्वाद दिया था और बातचीत की थी। हम आचार्य सत्यचित् जी से मिलकर गदगद हो गये थे। आचार्य द्वय के साथ उस समय लिए चित्रों को हम अपने मित्रों से साझा कर रहे हैं। यहां भी श्री वैदिक जी व हमने आवश्यकतानुसार साहित्य क्रय किया था। आचार्य सत्यानन्द जी का स्वास्थ्य देखकर हमें व वैदिक जी को चिन्ता हुई थी। भावी परिणाम को सोचकर हम दोनों चिन्तित भी हुए थे। आज पांच महीनों के भीतर ही आचार्य जी हमसे बिछड़ गये। हम सभी जानते हैं कि जो मनुष्य जन्मा है वह मरेगा भी अवश्य परन्तु हमारे आर्यसमाज में योग्य विद्वानों के दिवंगत होने पर उनके अनुरूप योग्य उत्तराधिकारी न होने से उनके द्वारा किया जाने वाला काम रूक जाता है। उनकी योग्यता व क्षमता तथा उनके संकल्पोंवाला उत्तराधिकारी न होने से समाज हितैषियों चिन्ता सताती है। ऐसा ही हमें आचार्य सत्यानन्द जी के जाने से भी लग रहा है कि अब प्रकाशन में वह बात नहीं रहेगी जो आचार्य जी के रहने पर थी।

आचार्य जी से हमारी विगत वर्ष के आरम्भ में कुछ पुस्तकों के संबंध में बाते भी हुई थी। आचार्य जी ने कहा था कि वह हरिद्वार डा. सुरेन्द्र कुमार जी के पास आते रहते है। वह जब आयेंगे तो सूचित करेंगे और मिलकर सभी विषयों पर विचार करेंगे। लगभग 1 घंटे से अधिक देर तक सम्भवतः फरवरी, 2016 में बातें हुई थी। अब आचार्य जी से मिलना नहीं होगा। हम गुरुकुल झज्जर के आचार्यगणों से निवेदन करेंगे कि यदि सम्भव हो तो आचार्य जी का विस्तृत संक्षिप्त जीवन चरित्र लिखवाकर प्रकाशित करें और कोई सभा व आर्यसमाज आचार्य जी के नाम से अपनी एक प्रकाशन शाखा खोलकर वर्ष में एक वा अधिक ग्रन्थ उसके अन्तर्गत प्रकाशित करते रहें जिसमें आचार्य जी के जीवन व कार्यों का सारगर्भित परिचय भी हो।

आचार्य सत्यानन्द जी का परिचय जानने के लिए हमने आर्यजगत के विख्यात संन्यासी एवं 9 गुरुकुलों के प्रणेता व संचालक स्वामी प्रणवानन्द जी से सम्पर्क किया। हमें ज्ञात हुआ कि आचार्य जी करनाल के निकट एक गांव में जन्में थे। आरम्भ में आप स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती जी के गुरुकुल घरोंडा में पढ़े थे। आचार्य सत्यानन्द जी से उनकी भेंट दिल्ली की तिहाड़ जेल में हुई थी। उन दिनांे आचार्य जी की आयु 16-17 वर्ष थी। उन्हीं दिनों गोरक्षा आन्दोलन के सत्याग्रहियों को तिहाड़ जेल में रखा गया था जिसमें स्वामी प्रणवानन्द जी भी स्वामी रामेश्वरानन्द जी के साथ थे। स्वामी जी ने बताया कि तब सत्यानन्द जी स्वामी रामेश्वरानन्द जी की सेवा में रहा करते थे। इसके बाद सत्यानन्द जी गुरुकुल झज्जर मे पढ़े जहां स्वामी प्रणवानन्द जी पहले से पढ़ रहे थे। यहां पढ़ते हुए आप काषाय वस्त्र पहनते थे। जब सत्यानन्द जी गुरुकुल में पढ़ते थे तो आपको लाला दीपचन्द आर्य जी तथा श्री श्याम सुन्दर जी से छात्रवृत्ति मिलती थी। पिछले कुछ समय से आचार्य जी रूग्ण चल रहे थे। आर्य विद्वान एवं आईपीएस डा. आनन्द कुमार जी से आपने उपचार में सहयोग करने के लिये था। डा. आनन्द कुमार जी ने कहा था कि आप दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में उपचार कराये। वह समस्त व्यय वहन करेंगे। स्वामी जी से बात करने के बाद हमने आचार्य विजयपाल जी, गुरुकुल झज्जर से बात की। उनसे ज्ञात हुआ कि आचार्य सत्यानन्द जी 5 मार्च से हरिद्वार के योगग्राम में प्राकृतिक व आयुर्वेदिक चिकित्सा करा रहे थे। 1 अप्रैल, 2017 को उन्हें देहरादून के हिमालयन हास्पीटल में भर्ती कराया गया जहां अगले दिन 2 अप्रैल, 2017 को सायं 7 बजे उनका देहान्त हो गया। आचार्य जी ने अपनी कोई वसीयत नहीं की और न ही अपना कोई उत्तराधिकारी बनाया है। आचार्य विजय पाल जी ने बताया कि वह कहा करते थे कि उनकी जो साहित्यिक सम्पत्ति है इसके धन से किसी ऐसे गरीब ब्रह्मचारी को जो देश हित के लिए उल्लेखनीय कार्य करे, उसकी सहायता करें। आचार्य विजय पाल जी ने कहा कि आचार्य सत्यानन्द जी निरन्तर अप्राप्य, दुर्लभ एवं महत्वपूर्ण ग्रन्थों का भव्य, नयनाभिराम व उत्कृष्ट कोटि का प्रकाशन कर रहे थे। यह कार्य अवरुद्ध हो गया है। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा 7 अप्रैल, 2017 को गुरुकुल झज्जर में प्रातः 9.00 बजे से 12.00 बजे तक आयोजित की गई है।

आचार्य सत्यानन्द जी ने अपने प्रकाशन का नाम सत्यधर्म प्रकाशन रखा था और कुछ समय के अन्तराल से वह नये नये प्रमुख व महत्वपूर्ण अप्राप्य ग्रन्थों का प्रकाशन करते रहते थे। पं. शिवशंकर शर्मा ‘काव्यतीर्थ’ जी का ग्रन्थ ‘वैदिक-विज्ञान’ काफी समय से अनुपलब्ध था। इसका प्रकाशन भी आपने सन् 2008 में किया था। हमें इसके प्रकाशन की जानकारी 2016 में हुई थी। हमने इसके लिए आचार्य जी को भी कहा था और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के युवा आर्य विद्वान डा. विवेक आर्य जी से निवेदन कर इसकी प्रति मंगाई थी। आचार्य सत्यानन्द जी ने इस पुस्तक का प्रकाशकीय लिखा है। वहां लिखे शब्दों में वह कहते हैं कि ‘प्राचीन काल से ही यह वैदिक मान्यता रही है कि चारों वेद ज्ञान-विज्ञान की निधि हैं। महर्षि दयानन्द ने भी उसी मान्यता को स्थापित करते हुए आर्यसमाज के प्रथम नियम में कहा है कि वेद सब सत्यविद्याओं के पुस्तक हैं। यही कारण है कि प्राचीन काल के जितने विषयों के ग्रन्थ मिलते हैं, उनके लेखक ऋषियों ने उनका मूलस्रोत वेद को ही घोषित किया है। जैसे-‘बृहदविमान शास्त्र’ नाम ग्रन्थ में महर्षि भारद्वाज ने ‘विमान विद्या’ का स्रोत वेद को लिखा है। मनुस्मृति में ‘समाज-व्यवस्था’ का आयुर्वेद में -चिकित्सा-विद्या’ का आदिस्रोत वेद को ही माना है। इस प्रकार सभी सत्यविद्याएं वेदों में मूलरूप से विद्यमान हैं। उसी परम्परागत प्राचीन मान्यता को विद्वान् लेखक पं. शिवशंकर शर्मा ने इस पुस्तक के द्वारा सिद्ध और पुष्ट किया है। ब्रह्माण्ड के सभी लोक पृथ्वी आदि ‘गोल आकार’ के हैं, यह स्पष्ट व स्थापित वैदिक सिद्धान्त है। यही कारण है कि पृथ्वी आदि का नाम ही ‘भूगोल’ है। फिर भी इसका श्रेय पक्षपात के कारण अंग्रेजों ने गैलीलियों नामक वैज्ञानिक को दे डाला है। इसी प्रकार रामायण काल में पुष्पक विमान का स्पष्ट वर्णन आता है, किन्तु उसके आविष्कार का श्रेय पक्षपात-भावना के कारण राइट बन्धुओं को दिया जाता है। इस पुस्तक के द्वारा उक्त सभी भ्रान्तियों का निराकरण हो सकेगा और प्राचीन ज्ञान-विज्ञान का परिचय प्राप्त होगा। इस दृष्टि से विद्वान् लेखक की यह पुस्तक महत्वपूर्ण है। आशा है पाठक इसको पढ़कर अपने प्राचीन ज्ञान-विज्ञान को जानेंगे।‘

इसके साथ ही हम दिवंगत आत्मा को अपनी श्रद्धांजलि देते हैं। ईश्वर उन्हें शान्ति व सद्गति प्रदान करें। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**